साबर साधनाओं के मसीहा
स्वामी निखिलेश्वरानंद
एक परीचय
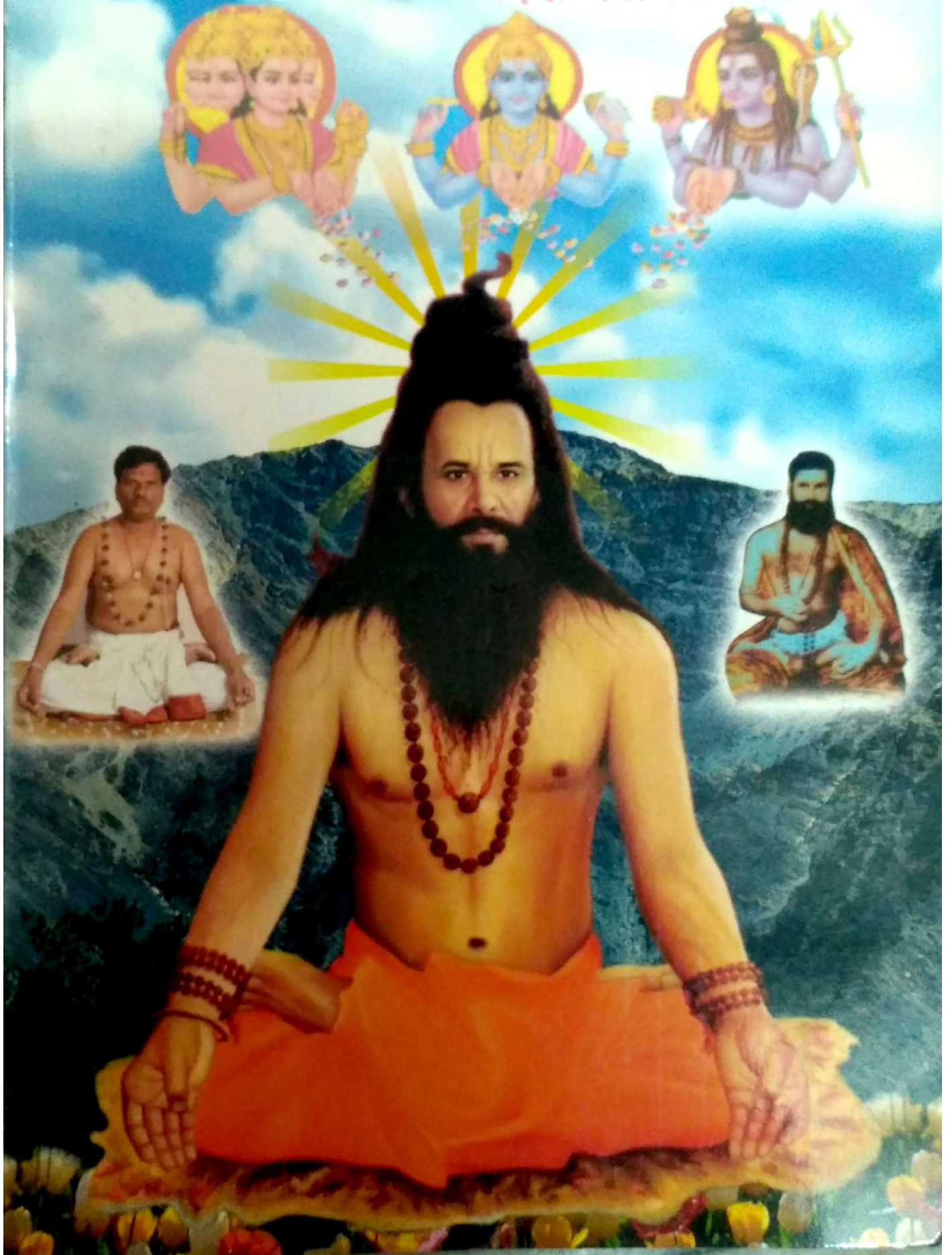
साबर विद्याएं-साफल्यता स्वामी निखिलेश्वरानन्दजी एक परिचय

आशीर्वाद :

डॉ. नारायणदत्त श्रीमाली

(परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानंदजी)

संकलन

श्री अनिल कुमार जोशी

गुरु कार्यं से प्रेरित

निखिल चेतनाकेन्द्र पुलिमामीडी

कंदकुर मंडल, रंगारेड्डी जिल्हा, हैद्राबाद (आं.प्र.)

Website:www.jaigurudevakj.com, E-mail:tapasya@jaigurudevak.com.

Ph : 040-24732434, Cell : 9849069834

साबर विद्याएं - साफल्यता
स्वामी निखिलेश्वरानन्दजी
एक परिचय

आशीर्वाद :

डॉ. नारायणदत्त श्रीमाली

संकलन

श्री अनिल कुमार जोशी
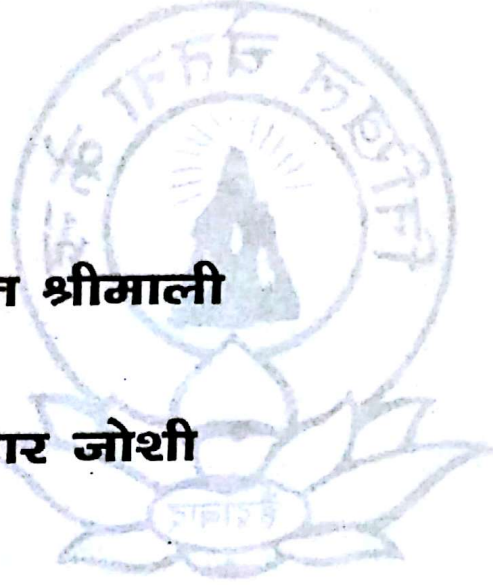
गुरु कार्य से प्रेरित

NIKHIL CHETANA KENDRA

H.No. 4-8-438, Behind Ram Mandir, Gowliguda,
Hyderabad - 12. **Ph : 040-24732434, Cell : 9849069834**

नोट : साधना सामाग्री मिलने का स्थान

GURU KRUPA POOJA STORES

H.No. 4-8-438, Behind Ram Mandir, Gowliguda, Hyderabad - 12.

साबर विद्याएं - साफल्यता
स्वामी निखिलेश्वरानन्दजी
एक परिचय

CONTENTS : **PAGE No.**

परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानंदजी

श्री अनिल कुमार जोशी

डॉ. नारायणदत्त श्रीमाली

परमहंस स्वामी विशुद्धानंदजी

1. साबर साधनाओं के मसीहा परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानन्दजी

परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानन्द जी का व्यक्तित्व अपने आप में अप्रतिम, अद्भुत और अनिवर्चनीय रहा हैं, उनमें हिमालय सी ऊंचाई है तो सागरवत् गहराई भी, साधना के प्रति वे पूर्णतः समर्पित व्यक्तित्व हैं तो जीवन के प्रति उन्मुक्त सरल और सहृदय भी। वेद, कर्मकाण्ड और शास्त्रों के प्रति उनका अगाध और विस्तृत ज्ञान है तो मन्त्रों और तन्त्रों के बारे में पूर्णतः जानकारी भी। यह एक पहले ऐसे व्यक्तित्व हैं जिनमें प्रत्येक प्रकार की साधनाएं समाहित हैं। उच्च कोटी की वैदिक और दैविक साधनाओं में जहां यह व्यक्तित्व अग्रणी है वही औघड, स्मशान और साबर साधनाओं में भी अपने आप में अन्यतम हैं। ऊँचे से ऊंचा विद्वान भी उनसे मार्गदर्शन प्राप्त करता है तो सामान्य गृहस्थ व्यक्ति भी अपनी समस्याओं का समाधान पाकर राहत अनुभव करता है। कुछ योगी किसी एक क्षेत्र में ही निष्णात और सिद्ध होते हैं, संसार में शायद बहुत ही बिरले व्यक्तित्व होंगे जिनमे इतने विचित्र विरोधाभासों और विविध साधनाओं का समन्वय स्वरुप होगा। स्वामी निखिलेश्वरानन्द जी का व्यक्तित्व ऐसा ही अनिंद्य अनिर्वचनीय और अप्रतिम व्यक्तित्व है।

मैने उन्हें हजारो लाखों की भीड मे प्रवचन देते हुए सुना है, उनका मानस अपने आप में संतुलित है, किसी भी विषय पर नपे-तुले शब्दों में अजस्त्र, अबाध गति से बोलते ही रहते हैं, लीक से एक इंच भी इधर उधर नही हटते, मूल विषय पर विविध विषयों की गहराई उनके सूक्ष्म विवेचन और साधना सिध्दियों को समाहित करते हुए वे विषय को पूर्णता के साथ इस प्रकार प्रस्तुत करते हैं कि सामान्य मनुष्य भी सुनकर समझ लेता हैं और मन्त्र मुग्ध बना रहता हैं। उनका मस्तिष्क पूर्णतः सन्तुलित हैं, यदि उनका मानस इस तथ्य पर स्पष्ट होता हैं कि एक घण्टा बोलना है तो ठीक एक घण्टे बाद अपने विषय का पूर्णता के साथ समापन कर लेते हैं। उन्हें औघड साधना, वैदिक साधना, दैविक साधना और संसार की महत्वपूर्ण साधनाओं का जितना सटीक, पूर्ण और उच्चतम ज्ञान हैं, वह अपने आप मे अन्यतम हैं, उनका साहचर्य पाकर ऐसा लगता हैं कि मानो हम किसी तलैया में स्नान नही कर रहे हैं अपितु समुद्र में अवगाहन करते हुए विविध रत्नो से अपने आपको सम्पूरित कर रहे हैं।

लाखो-करोडो साधको का मार्गदर्शक

मै उनके सन्यास और गृहस्थ-दोनो ही जीवन का साक्षी रहा हूं हजारो सन्यासियों की भीड में भी उन्हें बोलते हुए सुना है, उच्च स्तरीय विद्वत्तापूर्ण शुद्ध संस्कृत में अजस्त्र, अबाध रुप से, और गृहस्थ जीवन में भी उन्हें सरल हिन्दी में बोलते हुए सुना हैं, विषय को अत्यधिक सरल ढंग से समझाते हुए बीच में हास्य का पुट देते हुए मनोविनोद के साथ अपनी जो बात वे श्रोताओं के गले में उतारना चाहते हैं, भली प्रकार से उतार लेते हैं, सन्यासी जीवन में भी मैंने उनके साथ हजारों शिष्यों की भीड गतिशील होते हुए देखी है और आश्चर्यचकित रहा हूं कि एक व्यक्तित्व इतने सारे शिष्यों को किस प्रकार से सम्भाल लेता है, अलग-अलग साधनाएं, इच्छाएं और अलग अलग चिन्तन के इस समूह को भी वे सही ढंग से मार्गदर्शन करते रहते हैं, सभी सुखी हैं, सभी सन्तुष्ट हैं, आज उनके सन्यासी शिष्यों में से कुछ शिष्य तो इतनी ऊंचाई पर पहुंच गये हैं कि विश्व उन्हें सूर्यवत् मानने लगा हैं, सिध्दाश्रम में भी उनके बहुत संख्या में शिष्य हैं और वे आज भी उनका नामस्मरण कर अपने आपको रोमांचित और गौरवान्वित अनुभव करते हैं।

हिमालयवत् विराट व्यक्तित्व

दुसरी तरफ गृहस्थ जीवन में भी उनके शिष्यो को मैंने देखा हैं, उनके जन्म दिन " समर्पण दिवस " के अवसर पर भी उनके विराट व्यक्तित्व को पहिचानने की कोशिश की है, और मैने देखा हैं कि वे उन गृहस्थ शिष्यों के जीवन की छोटी सी छोटी समस्याएं सुलझाने में लगे हुए हैं, विविध समस्याओं से जुझते हुए भी उनके चेहरे पर किसी प्रकार का तनाव नही है, किसी प्रकार की वेदना या दुःख की रेखा तक नहीं है, सहज सरल भाव से उनसे बात करते हैं, उनकी तकलीफों को दुर करते हैं, गृहस्थ जीवन और साधना जीवन में उनका बराबर मार्गदर्शन करते रहते हैं, वास्तव में ही ऐसे अनिर्वचनीय गुरु का शिष्य होना भी अपने आप में गौरवमय है।

साधनाओं के मसीहा

साधनाओं के तो वे महारथी हैं ही, संसार की शायद ही कोई ऐसी साधना पध्दति रही होगी जिनको उन्होंने आत्मसात न किया हो। उन सभी साधनाओं को उन्होंने भली प्रकार से समझा है पहिचाना है अनुभव किया है और सफलता प्राप्त करने पर ही दूसरो को समझाया हैं। परन्तु साबर साधनाओं के तो वे मसीहा ही हैं, उन्होने गुरु गोरखनाथ के स्तर पर खडे होकर उनके चिन्तन को समझा है, गुरू गोरखनाथ और अन्य योगियों की साधनाओं की न्यूनताओं को दूर किया है, उनका परिमार्जन कर उन साधना विधियों को खोज निकाला है जो अभी तक अपने आप में अगम्य रही हैं। इस दृष्टि से वे उन साधकों और योगियों से भी ऊंचाई पर पहुंच गये हैं, जहाँ पर सभी साधक और योगी अपने आपको गौरवान्वित अनुभव करते हैं।

मन्त्र सृष्टा योगी

यह हमारे देश का दुर्भाग्य है कि हमारे यहाँ उच्च कोटी के योगी और सन्यासी उत्पन्न हुए, वशिष्ठ, विश्वामित्र, अत्रि, कणाद, पुलस्त्य, गौतम, भारद्वाज जैसे ऋषियों ने साधना की दैविक विधियो को ढूंढ निकाला तो गुरु गोरखनाथ, मत्स्येन्द्रनाथ जैसे साधको ने तन्त्र की उस विधान को प्रस्तुत किया जो सरल, सहज और सुबोध हैं। शंकराचार्य ने साधनाओं को समन्वय करने की चेष्टा की तो धनवन्तरी जैसे ऋषियों ने आयुर्वेद की विशिष्ट स्थितियों को प्रस्फुटित किया। नागार्जुन, प्रभृति विद्वानों ने जहाँ रसायन शास्त्र को पूर्णता देने का साहस किया वहीं दिव्यानन्द, अवधूतानन्द जैसे योगियों ने साबर साधनाओं को निश्चित उंचाई पर पहुंचाने का प्रयास किया, वह युग अपने आप में एक दिव्य युग था, जबकि साधना पध्दतियां और विविध साधनाएं ऊंचाई की ओर अग्रसर थी, परन्तु आगे चलकर यह क्रम टूट गया, बीच में अन्तराल आ गया, एक बहुत बडा अंधकार युग आ गया जिससे कि भारतीय उस ज्ञान विज्ञान से छिटक गये, शास्त्रो से कट गये उच्चकोटी के ग्रन्थ या तो विदेशो में चले गये या धर्मान्ध शासको ने जलाकर ख़ाक कर दिये, ऐसे अंधकार के क्षणो में पूर्ण सूर्य की तरह स्वामी निखिलेश्वरानन्दजी का प्रस्फुटन हुआ जिन्होंने उस खोई हुई सम्पदा को पुनः भारतियों को देने का अथक प्रयास किया, उनके अदभूत् व्यक्तित्व के बल पर वह खोई हुई निधि पुनः प्राप्त हो सकी, उस लुप्त साहित्य में पुनः आस्था कायम हो सकी, ओर एक बार पुनः इस धरती पर साधना का घोष सुनाई देने लगा, पुनः अंधकार छटने लगा पुनः प्रकाश की किरणे पृथ्वी पर अवतरित हुई, पुनः उन साधनाओं को समझने और सीखने की ललक लोगो में जगी, और वे साधना पथ पर अग्रसर हुए।

सागर से भी गहरा व्यक्तित्व

मुझे इनका शिष्य बनने का सौभाग्य मिला है और मैं इसमे अपने आपको गौरवान्वित अनुभव करता हूं, उनके साथ काफी समय तक मुझे रहने का सुअवसर प्राप्त हुआ है, मैने उनके अथक परिश्रम को देखा है, प्रातः जल्दी चार बजे से रात्री के बारह बजे तक निरन्तर कार्य करते हुए भी उनके शरीर मे थकावट का चिन्ह ढूंढने पर भी अनुभव नही होता, वे उतने ही तरोताज़ा और आनंद पूर्ण स्थितियो में बने रहते हैं, उनसे बात करते हुए ऐसा लगता है कि जैसे हम प्रचण्ड ग्रीष्म की गर्मी से निकलकर वट वृक्ष की शीतल छाया में आ गये हो, उनकी बातचीत से मन को शान्ति मिलती है, जैसे कि पुरवाई बह रही हो और सारे शरीर को पुलक से भर गई हो, साबर साधनाओं में भी मुझे उनसे बहुत कुछ सीखने का अवसर मिला है, जिसने भी उनको देखा है उन्होने एक बार अवश्य अनुभव किया होगा कि वे सही अर्थो में शिव स्वरुप औघड दानी हैं, ज्ञान की प्रत्येक स्थिति को दोनो हाथो से लुटाने में सदैव तत्पर और अग्रणी हैं, किसी भी प्रकार की साधना विधि और गोपनीय रहस्यो को उजागर करने में उन्हें कोई हिचक अनुभव नहीं होती, उनके जीवन में कृपणता नहीं हैं, उनका तो मानना है कि समुद्र जैसे अगाध ज्ञान भण्डार में से कोई लेगा भी तो दो चार छः बाल्टी ही ले पायेगा इससे उस समुद्र के स्तर में कितना और क्या अन्तर आ जायगा ?

सिध्दाश्रम का आधार है यह व्यक्तित्व

सिध्दाश्रम संसार का गौरव स्थल हैं, एक ऐसा पावन पवित्र दिव्य भूखण्ड जो कि अपने आप में अद्वितीय और अन्यतम हैं जहाँ उच्चकोटी के योगी विद्यमान हैं, और साधना की जिन ऊंचाईयो पर वे पहुंचे हुए हैं उनकी कोई क्षमता और तुलना हो ही नहीं सकती, प्रत्येक प्रकार की साधना और सिध्दियों का वह आधार रहा हैं, आज भी वहां सैकडों वर्ष की आयु प्राप्त योगी विचरण करते हुए दिखाई दे जाते हैं, सारा वातावरण सौरभमय दिव्य, मनोहर हैं जहाँ की माटी चन्दन की तरह ललाट पर लगाने योग्य है, जहां बारहो महीने विविध तरह के पुष्प अपने पूर्ण यौवन के साथ खिले रहते हैं, जहां की हवा में एक मस्ती पवित्रता और गुनगुनाहट हैं जहां की सिद्ध योगा झील प्रकृति का अदम्य वरदान है, जिसमे स्नान करने से एक ऐसे सुख की प्राप्ती होती हैं, जिसका वर्णन शब्दो के माध्यम से सम्भव ही नही है, उस झील में स्नान करने से स्वत: समस्त रोग समाप्त हो जाते हैं, काया पवित्र और दिव्य बन जाती हैं शरीर की वृद्धता समाप्त हो जाती हैं और पूरा शरीर एक विशेष आभा और यौवन से दीप्त सुगंधमय और सौरभमय बन जाता है, अलग अलग पर्णकुटीयों में जहां योगी ध्यानस्थ हैं, कहीं चिन्तन हो रहा हैं, तो कही कुछ समूह शास्त्रर्थ में व्यस्त हैं, कुछ साधक और योगी नवीन साधना पद्धतियों को ढूंढने मे संलग्न हैं, तो कही यज्ञ धूम से वातावरण सुरभित हैं सिद्ध झील के किनारे कुछ साधक किलोले कर रहे हैं मस्ती से उछल रहे हैं, आनन्द के साथ स्नान करते हुए तैर रहे हैं, तो कही किसी योगी की पीठ हिरणी अपनी

करुणापूरित आखों से टुकर-टुकर ताक रही हैं, सारा वातावरण अपने आप में अद्वितीय अनिर्वचनीय स्वप्नवत् अलौकिक हैं, जहां जाकर व्यक्तित्व अपने आप में खो जाता है, जीवन के रहस्यों को प्राप्त कर लेता हैं, और जरा मरण के भय से मुक्त होकर उन असीम सिध्दियों को प्राप्त कर लेता हैं, जो अपने आप में अद्वितीय हैं।

सिद्धाश्रम का आधार : निखिलेश्वरानन्दजी

ऐसे ही अद्वितीय वेदों में वर्णित सिद्धाश्रम के संचालक स्वामी सच्चिदान्दजी के प्रमुख शिष्य योगीराज निखिलेश्वरानन्दजी हैं, जिन पर सिद्धाश्रम का अधिकतर भार है, वे चाहे सन्यासी जीवन मे हों और चाहे गृहस्थ जीवन में, रात्रि को निरन्तर नित्य सूक्ष्म शरीर से सिद्धाश्रम जाते हैं, वहा की संचालन व्यवस्था पर बराबर दृष्टि रखते हैं यदि किसी साधक योगी या सन्यासी को कोई साधना विषयक समस्या होती हैं तो उसका समाधान करते हैं, और उस दिव्य आश्रम को क्षण-क्षण में नवीन बनाये रखते हुए गतीशील बनाये रखते हैं, वास्तव में ही आज सिद्धाश्रम का जो स्वरुप हैं, उसका बहुत कुछ श्रेय स्वामी निखिलेश्वरानन्द जी को हैं, जिनके प्रयासो से ही वह आश्रम अपने आप में गतिशील हो सका, प्राणमय और जीवन्त हो सका, तथा साधना की उष्मा से सुगन्धमय सुरभित और सम्मोहक हो सका, इस वजह से वे अन्य सभी योगियो और ऋषियो से बहुत उंचे उठ गये हैं। ऐसे प्रातः स्मरणीय निखिलेश्वरानन्द जी का स्मरण ही पूरे शरीर को पवित्र और दिव्य बना देने में समर्थ हैं।

आयुर्वेद को जिन्होने जीवन्त किया

आयुर्वेद के क्षेत्र में भी उन्होंने उन प्राचीन जडीबूटियों, पौधों और वृक्षो को ढूँढ निकाला हैं जो कि अपने आप में लुप्त हो गये थे वैदिक और पौराणिक काल में उन वनस्पतियों का नाम विविध ग्रन्थो में अलग हैं, परन्तु आज के युग में वे नाम प्रचलित नहीं हैं, आधिकांश जडी-बूटियाँ काल के प्रवाह में लुप्त सी हो गई थी धीरे-धीरे अन्धकार में डूबती जा रही थी, ऐसे ही समय में स्वामी निखिलेश्वरानन्द जी का आविर्भाव हुआ जिन्होंने साधनाओं के बल पर उन वनस्पतियों के पौराणिक नाम और आधुनिक नाम ढूँढ निकाले, उनके गुण दोषो का विवेचन किया और उन स्थलों का पता लगाया जहाँ पर वे जडी बूटिया थी, अपने फार्म में उसी प्रकार का वातावरण देते हुए उन जडी बूटियो को पुनः लगाने, विकसित करने और प्राप्त करने का प्रयास किया, मील से भी ज्यादा लम्बा चौडा ऐसा फार्म आज विश्व का अनूठा स्थल हैं, जहां पर ऐसी दुर्लभ जडी-बूटियों को सफलता के साथ उगाने में सफलता प्राप्त की हैं, उनके अथक प्रयासों से ही वे वनस्पतियाँ जीवित रह सकी हैं, जिनके माध्यम से असाध्य से असाध्य रोग दूर किये जा सकते हैं, उनके गुण दोषो का विवेचन उनसे लाभ, उनका सेवन, उनका प्रयोग और उनसे सम्बन्धित जितनी सूक्ष्म जानकारी स्वामी निखिलेश्वरानन्द जी को है, वह अपने आप में अन्यतम है, आश्चर्य होता है कि एक ही व्यक्ति में इतने गुण हैं, उनके अथक प्रयासो से ही आज आयुर्वेद अपनी पूर्ण क्षमता के साथ जीवित रह सका है,और संसार की अलग-अलग चिकित्सा विधियों के बीच अपना सिर उंचा किये हुए खडा हैं।

रसायन विज्ञान को जिन्होने जीवन दिया

परन्तु आगे चलकर यह ज्ञान लुप्त हो गया, आने वाली पीढ़ियाँ इतनी कायर और कमजोर निकली कि उस ज्ञान को सम्भाल कर नहीं रख सकी, इससे सम्बन्धित अधिकांश ग्रन्थ जल कर खाक हो गये और एक समय तो ऐसा आ गया कि यह विद्या ही भारतवर्ष से लुप्त हो गई, परन्तु ईश्वर का विधान अपने आप में अन्यतम रहता हैं, स्वामी निखिलेश्वरानन्द जी के रुप में उन्होने ऐसे ही व्यक्तित्व का अविर्भाव किया जिनके अथक प्रयासों से यह खोया हुआ ज्ञान भारत वासियो को पुनः प्राप्त हो सका। पारद के सोलह संस्कार ही नही अपितु चौवन संस्कार कर उन्होने सिद्ध कर दिया कि इस क्षेत्र में उन्हे जो ज्ञान और ऊंचाइयाँ हासिल हैं, वह अपने आप में अन्यतम हैं, एक धातु से दुसरे धातु में रुपान्तरित करने की विधियाँ उन्होने खोज निकाली और सफलतापूर्वक अपार जन समूह के सामने ऐसा करके उन्होने दिखा दिया कि रसायन क्षेत्र में हम आज भी विश्व में अव्दितीय हैं, उनके कई शिष्यों ने उनके सान्निध्य में रसायन ज्ञान प्राप्त किया हैं, और तांबे से स्वर्ण बनाकर इस विद्या को महत्ता और गौरव प्रदान किया हैं, वास्तव में ही ऐसे व्यक्तित्व के बल पर ही यह गौरवमय ज्ञान पुनः अन्धेरी गुफाओ से निकल कर प्रकाश में अपनी उंचाई पर पहुंच सका हैं।

साबर साधनाओं का अन्यतम योगी

साबर साधनाएं जीवन की सरल, सहज और महत्वपूर्ण साधनाएं हैं, ये ऐसी साधनाएं हैं, जिनमें जटिल विधि विधान नहीं हैं, जिनमें लंबा चौडा विस्तार नही हैं, जिनमे संस्कृत के सूक्ष्म श्लोक नहीं हैं, अपितु सरल भाषा में सफलता ही श्रेणिया हैं, इस क्षेत्र मे भी उन्होने उन विद्याओ को ढूंढ निकाला हैं, जो अपने आप में लुप्त हो गई संसार की आठ विद्याएं ऐसी हैं, जो कई हजार वर्ष पहले अपनी पूर्ण ऊंचाई पर स्थित थी, परन्तु आज ये विद्याएं लगभग लुप्त हैं, और शायद ही उनके बारे में योगीयो को जानकारी होगी, सिद्धाश्रम में अवश्य इनके बारे में निरन्तर शोध हो रहा हैं, और उन चिन्तनों तथा साधना विधियों को ढूंढ निकाला गया हैं जिसकी वजह से ये विद्याएं जीवित हैं। स्वामी निखिलेश्वरानन्द जी का व्यक्तित्व अपने आप में इस क्षेत्र में पूर्णत्व लिए हुए हैं, जिसमे इन सभी विद्याओं की पूर्ण प्रामाणिकता के साथ जानकारी हैं, और अपने शिष्यों को भी जिन्होने दक्ष किया हैं। वास्तव में ही इस समय विश्व में स्वामी निखिलेश्वरानन्द जी एक मात्र ऐसे व्यक्तित्व हैं जिन्हें इन विद्याओं की पूर्ण प्रामाणिक जानकारी है।

परकाया प्रवेश साधना

स्वामी निखिलेश्वरानन्द जी उन दिनो साधना की ऊंचाईयों पर थे, उनके विशाल वक्ष स्थल और सिंह के समान चाल से हम सब गर्वित थे, हम सभी शिष्य महाबलेश्वर में समुद्र के किनारे बैठे हुए थे और चर्चा परकाया प्रवेश की हो गई, हमने कहा शंकराचार्य के समय में यह विद्या अवश्य जीवित रही होगी पर अब तो लुप्त हैं, तो उन्होंने कहा विद्याएं लुप्त नहीं होती और उसी समय अनायास समुद्र की लहरो से उठती गिरती लाश किनारे पर आती हुई देखा। स्वामी जी ने चैतन्य देव को कहा कि इसे किनारे पर ले आओ, हम चार पांच शिष्यो ने उस मृत देह को किनारे पर लाये, स्वामीजी उस दिन मूड में थे उन्होंने शून्य में से व्याघ्र चर्म प्राप्त किया और उस पर बैठ गये, उनके कमलवत् नेत्र बंद हो गये और होठो से कुछ मन्त्र स्फुट होने लगा, कुछ ही क्षणो में हमने देखा कि उनका शरीर निश्चेष्ट हो गया है और उस मुर्दा शरीर में हलचल होने लगी है, कुछ ही क्षणो में वह मृत शरीर अपने पावो पर उठ कर खडा हो गया।

स्वामी जी लगभग आठ घण्टे तक उस देह में बने रहे और फिर सायंकाल पुनः अपने शरीर में आकर प्रामाणिकता के साथ सिद्ध कर दिया कि यह आश्चर्यजनक विद्या आज भी जीवित हैं।

इसके बाद तो स्वामी जी के आठ दस शिष्यो ने इस साधना में पूर्णता भी प्राप्त की और आज वे सभी सिद्धाश्रम में स्थित हैं।

वास्तव में ही उस दिन निखिलेश्वरानन्द जी ने जो कुछ दिखाया उससे भारतीय साधनाओं के प्रति हम सभी शिष्यो का मस्तक गर्व से दीप्त हो उठा ।

हादी विद्या

टिहरी गढवाल एक प्रमुख शहर हैं, जहां पर स्वामी निखिलेश्वरानन्द जी की शिष्या उर्मिला बहिन रहती हैं, आज वह लगभग ७० वर्ष की हो गई हैं पर पिछले चालिस वर्षो से उसने न अन्न लिया हैं और न जल ग्रहण किया हैं, स्वामी जी ने ही दीक्षा के समय उसे हादी विद्या की दीक्षा दी थी।

मैं स्वयं इनका शिष्य रहा हूं और उत्तर काशि में स्थित "प्रत्यंगआश्रम" में हम छः साल सन्यासी शिष्य इसके गवाह हैं, कोई भी आकर इस बारे में जाँच कर सकता हैं।

पूज्य स्वामीजी ने हादी विद्या की दीक्षा भी दी हैं, सन्यासियों को भी और गृहस्थ व्यक्तियों को भी, इसमे कई कई वर्षो से न तो मल मूत्र विसर्जन की आवश्यकता रही हैं और न उन्हें भूख प्यास ही व्याप्त हुई हैं।

वास्तव में ही वह विद्या साधना के क्षेत्र में और सफलता के लिये अद्वितीय हैं, शांभवी दीक्षा के बाद ही "हादी" दीक्षा दी जा सकती हैं और इसके माध्यम से व्यक्ति जीवन भर बिना अन्न जल के स्वस्थ और तरोताजा बना रहता हैं।

कादी विद्या

यह एक लुप्त विद्या हैं परन्तु स्वामी निखिलेश्वरानन्द जी इसके सिध्द हस्त योगी हैं। बद्रीनाथ में स्वामी रामेश्वरानन्द जी आज भी जीवित हैं, जिन्होंने उनसे कई वर्ष पहले दीक्षा ली थी, सर्दियो के दिनो में जब बद्रीनाथ मन्दिर के पट बंद हो जाते हैं और सभी लोग नीचे उतर आते हैं तब भी स्वामी रामेश्वरानन्द जी अपनी गुफा में ही रहते हैं और भयंकर सर्दी में तथा बर्फ के तूफान और अघड में भी वे अविचलित रुप से साधना करते रहते हैं।

मैने स्वयं इस साधना को पूज्य गुरुदेव से प्राप्त किया था, और पिछले पैतीस वर्षो में सर्दी, गर्मी, वर्षा का रंच मात्र ही प्रभाव मेरे शरीर पर व्याप्त नही हुआ हैं, इस साधना से किसी प्रकार का रोग भी व्याप्त नहीं होता ।

उनकी आज्ञा से मैने दो तीन शिष्यो को यह साधना सम्पन्न करवाई हैं और इसमे भी उन्हें सफलता मिली हैं, वास्तव में ही पूज्य निखिलेश्वरानन्द जी का व्यक्तित्व अनिर्वचनीय हैं जिनके प्रकाश में हम शिष्य निर्भीक भाव से गतिशील हैं।

मदालसा विद्या

वास्तव में ही वे शिष्य सौभाग्यशाली कहे जा सकेत हैं जिन्होंने पूज्य निखिलेश्वरानन्द जी से दीक्षा ली हैं या उनका शिष्य बनने का गौरव प्राप्त किया हैं।

मदालसा विद्या भारत की लुप्त विद्या हैं, और स्वामी निखिलेश्वरानन्द जी के अलावा केवल एक और योगी हैं जिन्हें इस का ज्ञान हैं, वे भी स्वामी निखिलेश्वरानन्द जी के ही शिष्य हैं पिछले दिनो देहरादून के आगे भैरव पहाडी पर योगियो के सम्मेलन में गुरुदेव की आज्ञा से सेलग बाबा ने इस विद्या को प्रामाणिकता के साथ प्रस्तुत किया था।

इस साधना के बाद व्यक्ति चाहे तो अपने शरीर को बीस, तीस या चालीस फीट लंम्बा चौडा आकार दे सकता हैं या अपने शरीर को मच्छर का आकार देकर अति सूक्षम रुप धारण कर सकता हैं, लंका विजय से पूर्व हनुमान जी ने भी इस साधना के बल पर ही विस्तृत और सूक्ष्म रुप धारण किया था।

मेरी दीक्षा के समय केदारनाथ की वासुकी झील के पास स्वामी निखलेश्वरानन्द जी ने इस साधना को समझाते हुए अपने शरीर को ७५ फीट लंम्बा तथा १८ फीट चौडा बना कर बता दिया था और कुछ ही मिनटो के बाद उन्होंने भ्रमर का आकार ग्रहण कर यह समझाया था कि साधना के बल पर शरीर की ये दोनो ही स्थितिया संभव हैं, मैं ही नही अपितु उसमे मेरे अलावा गुरु भाई सेलग बाबा स्वामी पूर्णानन्द योगी महेशानन्द, बहन चिन्तपूर्णा और धन्वी योगीनी आदि कई उपस्थित थे।

आज भी उन दिनो का स्मरण कर शरीर का रोमरोम उनके चरणो में बिखर जाता हैं।

जो साधनाएं भारत वर्ष से लुप्त हो गई

ये लुप्त साधना - विद्याएं निम्न हैं, जिनका ज्ञान संभवतः स्वामी निखिलेश्वरानन्द जी के अलावा एक दो सिद्धाश्रम के योगियो को ही होगा या शायद नहीं भी।

१-परकाया प्रवेश विद्या

इसमे साधक अपने शरीर को छोडकर दूसरे किसी मृत देह में जाकर उसे जीवित कर देता है, और जब तक चाहे उस दूसरी देह में बना रहता हैं, और जब चाहे वह पुनः अपने मूल शरीर में आ जाता है।

२-हादी विद्या

इस विद्या के द्वारा जीवनभर न तो भूख प्यास लगती है, और न मलमूत्र विसर्जन की क्रिया ही सम्पन्न करनी पडती है, इतना होने पर भी उसके शरीर में किसी प्रकार की क्षीणता या कमजोरी नहीं आती।

३-कादी विद्या

इससे साधक के शरीर पर सर्दी गर्मी वर्षा तूफान अन्धड आदि का प्रभाव व्याप्त नही होता, वह सर्दियो में भी बर्फ में उसी प्रकार मस्ती से विचरण करता हैं, जिस प्रकार भयंकर गर्मी में अग्नि के बीच।

४-मदालसा विद्या

इस साधना के द्वारा व्यक्ति अपने शरीर के आकार को सौ गुना ज्यादा लंम्बा चौडा बना सकता है और चाहे तो अपने शरीर को मच्छर का आकार देकर कही पर भी विचरण कर सकता है।

५-वायुगमन सिद्धि

इस सिद्धि के बल पर व्यक्ति का शरीर हवा से भी हल्का हो जाता है और वह कुछ ही सैकण्डो में एक स्थान से दूसरे स्थान पर चला जाता हैं, इस पूरी प्रकिया में उसको कुछ सैकण्ड लगते है।

६-कनक धारा सिद्धि

इस साधना के बल पर साधक जब चाहे कही पर भी स्वर्ण वर्षा करा सकता है, जिस प्रकार वर्षा में पानी की बूंदे गिरती हैं, उसी प्रकार से अजस्त्र सोने के टुकडे गिरने लग जाते हैं, शंकराचार्य ने ऐसा ही प्रयोग सिद्ध करके दिखाया था।

७-सूर्य विज्ञान

इस विज्ञान के माध्यम से एक पदार्थ को किसी भी दूसरे पदार्थ में रुपान्तरित कुछ ही सेकण्डो में किया जा स्कता है।

८-मृत संजीवनी विद्या

यह महत्वपूर्ण साधना विधि है और इसके द्वारा मृत शरीर में प्राणो का पुनः संचार किया जा सकता है, यह कल्पित तथ्य नही हैं, अपितु आज के युग में उतना ही सत्य और प्रामाणिक है जितना शंकराचार्य के समय में था।

शत्-शत् वंदन करते हैं हम उन्हें

स्वामी परमहंस निखिलेश्वरानन्द जी को मैने निकट से समझने का प्रयास किया है और अपनी आंखो से इस समस्त साधनाओं को सम्पन्न करते हुए देखा है, एक बार नही, कई-कई बार मैने देखा है परखा है, सीखा है और समझा है। वास्तव में इस विश्व में ये ही एकमात्र ऐसे व्यक्तित्व हैं जो उपरोक्त विद्याओं से संबन्धित दैविक साधनाओं में निष्णात हैं। उनसे मुझे इस संबन्ध में जो कुछ प्राप्त हुआ है वह मेरे जीवन की निधि है और यह हमारे देश का और देशवासियों का सौभाग्य है कि ऐसा अद्वितीय व्यक्तित्व हमारे बीच हैं, हम उन्हें शत-शत वंदन करते हैं, नमन करते हैं और उनके प्रति श्रद्धानत हैं।

साबर साधनाओं के महत्वपूर्ण तथ्य

साबर साधनाओं का तात्पर्य ऐसी साधनाएं हैं जो अपने आप में पूर्ण हैं, और शीघ्र सफलता दायक हैं। अनुभव में यह आया हैं कि अन्य साधनाओं की अपेक्षा इनमे शीघ्र और निश्चित सफलता प्राप्त होती हैं, फिर भी इन साधनाओं के बारे में कुछ एसे भी तत्थय हैं, जिनका पालन करना उचित माना गया हैं।

1. साबर साधनाओं की कोई भी जाति, वर्ग, रंग आयु का पुरुष अथवा स्त्री सम्पन्न कर सकता हैं।
2. साबर साधनाओं के लिये कोई विषेश मुहूर्त की अवश्यकता

नही होती, जहाँ पर वार या समय दिया हुआ हो, तो उसका पालन करना चाहिये, मगर जहां पर ऐसा उल्लेख नही हो वहाँ कोई भी साधना शुक्रवार से प्रारंभ की जा सकती हैं।

3. कुछ विशेष साधनाओं के लिये निशचित रंग की धोती या आसन आदि का उल्लेख हैं, परन्तु जहां एसा उल्लेख नही हैं, वहां पीले रंग की धोती और पीला आसन मान लेना चाहिये, जहां दिशा आदि का संकेत नही हो वहां साधक को दक्षिण दिशा की ओर मुंह कर साधना करनी चाहिये ।

4. साबर साधनाओं में उपकरणो की विशेष अनिवार्यता मानी गई हैं, स्थान-स्थान पर ऐसे उपकरणों का उल्लेख भी हैं, उपकरणो के माध्यम से सफलता प्राप्त हो सकती हैं, परन्तु इस बात का ध्यान रखना चहिये कि ये उपकरण प्रामाणिक सही मन्त्र सिद्ध और प्राण प्रतिष्ठा युक्त हों, बिना विश्वास किये उपकरण प्राप्त नही करने चाहिये, क्योकि वे नकली या अप्रमाणिक हो सकते हैं। एसी स्थिति में सफलता प्राप्ति मे सन्देह ही रहता हैं।

5. साधना में चाहे तो घी या तेल का दीपक लगाया जा सकता हैं, किसी भी प्रकार के तेल का प्रयोग किया जा सकता हैं, जब साधना में मन्त्र जप चले तभी तक दीपक लगाए रखना उचित रहता हैं, अगरबत्ती या धूप किसी भी प्रकार का प्रयुक्त हो सकता हैं, परन्तु साबर साधनाओं में लोबान की अगरबत्ती या धूप की विशेष महत्ता मानी गई हैं ।

6. अलग-अलग मालाओं का विधान हैं, परन्तु जहां माला का विधान या माला के बारे में संकते नही हैं, लगभग 100 मनके एक माला में होने चाहिये, यदि माला मन्त्र जप के बीच में टूट जाय तो चिन्तित होने की आवश्यकता नही हैं उसे पुनः धागे में पिरोया जा सकता हैं।

7. साधना काल में कई प्रकार के संकेत मिल जाते हैं, परन्तु साधना के बीच में विचलित होने की आवश्यकता नहीं हैं, जितनी संख्या दी गई हैं, उतनी संख्या में मन्त्र जप अनिवार्य होना चाहिये तभी साधना पूर्ण होती हैं।

8. यदि साधना काल में कोई भयानक दृश्य दिखाई दे जाय तो घबराने की या विचलित होने की जरुरत नहीं हैं किसी भी प्रकार का अहित साधक के जीवन में नही हो सकता, अतः निश्िंचत होकर साधना सम्पन्न करे।

9. एक साधना सामग्री से एक बार ही साधना सम्पन्न होती हैं, अन्य साधनाओं या दूसरी साधना के लिये पुनः उपकरण या सामग्री प्राप्त करनी चाहिये तभी सफलता मिलती हैं।

10. साबर साधनाओं मे गुरु की विशेष महत्ता मानी गई हैं, अतः साधना काल में गुरु का चित्र या मूर्ति स्थापित करनी चाहिये, और नित्य उनसे अनुमति लेकर ही साधना सम्पन्न करनी चाहिये।

11. साबर साधनाओं मे पूर्ण श्रद्धा होनी आवश्यक हैं, अधूरा विश्वास और मन्त्रो अभवा यन्त्रो पर अश्रद्धा होने पर सफलता प्राप्त नहीं हो सकती।

12. साधना काल में यथासंभव एक समय भोजन करे और ब्रह्मचर्य पालन करे, तो ज्यादा उचित रहता है, यद्यपि यह अनिवार्य नहीं है।

13. साबर साधनाएं दिन को या रात्री को किसी भी समय सम्पन्न की जा सकती हैं।

14. साबर साधनाएं वर्तमान जीवन का वरदान हैं, यद्यपि ये साधनाएं अधिकतर गुप्त रही हैं, यदि ऐसी साधनाएं प्राप्त होती हैं तो

जीवन का सौभाग्य मानना चाहिये यदि किसी कारण से एक बार में सफलता न मिले तो बार-बार प्रयत्न करना चाहिये, यद्यपि यह सही हैं कि साबर साधनाओं में अन्य की अपेक्षा शीघ्र सफलता मिलती हैं।

साबर साधनाएं ही क्यो ?

युग के अनुरुप अपने आपको ढालकर जो व्यक्ति कार्य करते हैं, उन्हें जीवन में अवश्य ही सफलता प्राप्त होती हैं वैदिक और पौराणिक काल में संस्कृत उच्चारण की महत्ता थी, उनके पास समय भी था, और लम्बी आयु होने की वजह से वह ऐसी साधनाएं कर सकते थे, जिनमे संस्कृत उच्चारण हो और लंबे समय तक सम्पन्न होने वाली साधनाएं हो।

परन्तु निम्न बारह कारणों से आज के युग में साबर साधनाएं सबसे ज्याद़ा उपयोगी और महत्वपूर्ण मानी गई हैं।

1. वर्तमान में उच्च कोटि के योगी सन्यासी और सिद्धाश्रम के साधकों ने भी इस तथ्य को स्वीकार किया हैं कि आज के युग में साबर साधनाएं शीघ्र सफलतादायक और निश्चित परिणाम देने में समर्थ हैं।
2. इन साधनाओं मे जटिल विधि विधान क्रिया कलाप पवित्रता आदि की उतनी आवश्यकता नही हैं, जितनी अन्य दैविक साधनाओं में होती हैं।
3. ये साधनाएं सरल भाषा में हैं इसलिये संस्कृत न जानने वाले

भी इन साधनाओं को और सम्बंधित मन्त्रो को भली प्रकार से ऊच्चारित कर सकते हैं, तथा सफलता पा सकते हैं।

4. ये कम समय में तथा पूर्णता के साथ सफलता देने मे सहायक हैं।

5. इन साधनाओं में यदि त्रुटि रह भी जाय तब भी किसी प्रकार की हानि नहीं होती।

6. इन साधनाओं को पुरुष या स्त्री बालक या बालिका तथा किसी भी वर्ण जाति रंग या नस्ल का व्यक्ति सम्पन्न कर सकता हैं।

7. इसमे जटिल क्रियाकलाप नहीं हैं, और ये शीघ्र सफलता देने में सक्षम हैं।

8. अन्य साधनाओं में जहाँ सवा लाख या पाँच लाख मन्त्र जप करने होते हैं, वहीं इन साथनाओं में कम संख्या मे मन्त्र जप की अवश्यकता होती है।

9. वर्तमान युग की अनिवार्यताएं और अवश्यकताएं अलग प्रकार की हो गई हैं। और ये मन्त्र तथा साधना विधियां उस के अनुरुप हैं अतः इनके माध्यम से हम अपने व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन की समस्याओं को भली प्रकार से सुलझा सकते हैं।

10. यदि साधनाओं में प्रयुक्त उपकरण सही और प्रामणिक हो तो साधना मे सफलताएं निश्चित रुप से प्राप्त हो जाती हैं।

11. वर्तमान युग के सभी साधको और योगियों ने स्वीकार किया हैं कि कलियुग में साबर साधनाएं ज्यादा प्रामाणिक और शीघ्र सफलतादायक हैं।

12. इनका प्रभाव अचूक, तुरन्त और पूर्णता के साथ होता हैं।

साबर साधनाओं के बारे मे सावधानियाँ

1. साबर साधनाओं के बारे में महत्वपूर्ण तथ्य यही हैं कि पूर्ण श्रद्धा और विश्वास होने पर ही साधनाओं में सफलता होती हैं।

2. इन साधनाओं में गुरु पूजन का विशेष महत्व होता हैं, अतः साधनाओं के प्रारंभ मे गुरु पूजन अवश्य करना चाहिये।

3. मन्त्र जप शुद्ध रुप से उच्चारण होना चहिये।

4. साधना काल में कुछ विशेय दृष्य दिखाई दे सकते हैं भूत साधना आदि में प्रत्यक्ष भूत उपस्थित हो सकते हैं परन्तु वे किसी प्रकार से हानि नही पहुँचाते और न दुख देते हैं अतः इस सम्बंध मे विचलित होने की अवश्यकता नही।

5. साधना में पुरुष और स्त्री का कोई भेद नही हैं, अतः कोई भी इस प्रकार की साधना को कर सकता हैं रजस्वला समय में यह साधनाएं सम्पन्न नही की जानी चाहिये।

6. साधनाकाल में हजामत बनवाना अपना कार्य व्यापार या नौकरी करना, आदि सम्पन्न कर सकते हैं।

7. ये साधनाएं घर के किसी एकान्त कक्ष में या मंदिर मे धर्मशाला में नदी किनारे या जंगल में कर सकते हैं एकान्त कक्ष का आभाव हो तो परिवार के सभी सदस्यो के सो जाने के बाद साधना एवं मन्त्र जप किया जा सकता हैं।

8. साबर साधनाओं को सम्पन्न करने मे या साधना अधूरी छूट जाने पर अथवा साधना में न्यूनता रहने पर किसी प्रकार की हानी नही होती और न कोई नुकसान होता हैं। इसलिये इन साधनाओं की महत्ता वर्तमान युग में विशेष रुप से हैं।

9. साधना से सम्बंधित किसी भी प्रकार की जानकारी के लिये " मन्त्र यन्त्र " विज्ञान - हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राजस्थान) से पत्र व्यवहार कर जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

और यो सफलता प्राप्त करे

1. सर्व प्रथम प्रमाणिक यंत्र अथवा सामग्री मंगवा ले, या प्राप्त कर ले।
2. फिर मन में निश्चय कर ले कि मुझे यह प्रयोग सम्पन्न करना ही हैं।
3. साधना में पवित्र होकर शुद्ध स्नान आदि कर बैठ जाय, गुरु चित्र की पूजा कर अनुमति ले, कि आपको सफलता मिले।
4. फिर हाथ में जल लेकर संकल्प करे, कि में यह प्रयोग अमुक सिद्धि के लिये या अमुक रुधा की पूर्ति के लिये कर रहा हूँ - फिर जल जमीन पर छोड़ दे।
5. अपनी इच्छा और साधना को गोपनीय रखे।
6. साधना मे सफलता मिलने पर भी संयम बने रहे।

बीमारियाँ आपकी चिकिस्ता साबर की

मानव का पहला कर्तव्य होता हैं कि वह अपने शरीर को स्वस्थ और तन्दुरुस्त रखे। उसका सारा प्रयत्न यही होता है। यदि तबियत ठीक है तो उसे खान पान रहन सहन मौज शौक सब अच्छे लगते हैं, परन्तु बीमारी होने पर चाहे उसके पास करोडो रुपये हो तब भी बेकार हो जाते हैं, और उसका आनंद वह नहीं उठा सकता।

आयुर्वेद के माध्यम से तो असाध्य बीमारियों की चिकित्सा होती है परन्तु इस क्षेत्र में साबर साधनाओं के माध्यम से भी बीमारियाँ दूर हो जाती हैं और व्यक्ति पूर्णतः स्वस्थ हो जाता हैं।

मैं अपने क्षेत्र का प्रसिध्द वैद्य रहा हूँ सन्यासी तो बाद में बना परन्तु मेरा सारा जीवन लोगो के रोग दुःख दूर करने और उन्हें निरोग करने में ही व्यतीत हुआ है। मैने यह अनुभव किया है कि जो बीमारियाँ अयुर्वेद के माध्यम से ठीक नहीं हो सकती वे भी साबर मन्त्रों के माध्यम से ठीक हो जाती हैं। और इसका फल तुरन्त प्राप्त होता है भारतीय ही नहीं अपितु विदेशी डाक्टर भी साबर मन्त्रो के ऐसे अलौकिक प्रभाव को देखकर दंग रह गये हैं, और वे भी अब अपनी चिकित्सा में साबर मन्त्रो का प्रयोग करने लगे हैं आगे के पृष्ठों में कुछ विशेष बीमारियाँ और उनसे संबंधित साबर प्रयोग दे रहा हूँ जो कि परीक्षित हैं, प्रामणिक हैं और शीघ्र निरोग करने का सामर्थ्य रखते हैं

उदर रोग

कई कारणो से उदर रोग हो जाते हैं थोडे बहुत रुप में बराबर दर्द बना ही रहता हैं, पेट मे जलन भोजन ना पचना रह रह कर दर्द उठना पेट मे शूल होना, किसी विशेष भाग पर पेट में दर्द बना रहना आँखो में तकलीफ होन:, आंतो में घाव हो जाना अतिसार आदि रोगों के लिए यह प्रयोग श्रेष्ठ तम हैं और इस प्रयोग से निश्चित ही रोगी को लाभ होता है।

किसी रविवार के दिन रोगी स्वयं या कोई व्यक्ति स्नान कर शुद्ध वस्त्र धारण कर उत्तर दिशा की ओर मुँह कर बैठ जाय, और सामने तेल का दीपक लगावे फिर तांम्बे के पात्र में ' रोग मुक्ति यन्त्र ' रख दे जो कि मन्त्र सिद्ध हो, और उस पर केशर का तिलक करे हाथ में जल लेकर कहे कि मैं अमुक व्यक्ति के अमुक रोग को दूर करने के लिए यह साबर प्रयोग कर रहा हूं।

फिर हकीक माला से निम्न मन्त्र का जप तीन माला रोगी या कोई व्यक्ति करे।

मन्त्र :- ॐ मुं मुकटेश्वरी देवी आवे उदर रोग मिटावे अमुख को ठीक करे जो न करे तो महावीर को दुहाई शब्द साचा पिण्ड काचा, फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा

उस मन्त्र पर जो जल चढाया जाय उसमे से तीन चम्मच रोगी को पिला दे और बाकी जल में कपडा भिगोकर रोगी के पेट पर फेर दे इस प्रकार ग्यारह दिन तक करें।

ग्यारह दिन के बाद वह यन्त्र धागे में पिरोकर रोगी के कमर में बांध दे तो निश्चय ही रोगी किसी भी प्रकार के उदर रोग से मुक्त हो जाता है और पूर्ण स्वास्थ्य लाभ करता है।

2. चर्म रोग और रक्त रोग

यदि किसी भी प्रकार का चर्म रोग हो त्वचा पर सफेद या लाल दाग - बनने लग गये हो तो चमडी पर चकत्ती होने लग गई हो या त्वचा बदरंग हो रही हो अथवा शरीर पर दाद, खाज खुजली आदि हो या शरीर मे रक्त की न्यूनता हो यह प्रयोग तुरन्त सिद्धिदायक है और इसे निश्चित रुप से पूर्ण चर्म रोग मिट जाते हैं।

शुक्रवार के दिन नौ पीपल के पत्ते लाकर एक थाली में सजा दे और प्रत्येक पीपल के पत्ते पर नर्मदेश्वर शिवलिंग रख दे जो मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठायुक्त हो, पात्र के बाहर नौ दिये लगा ले और फिर रुद्राक्ष माला से निम्न मन्त्र की तीन माला मन्त्र जप रोगी या कोई व्यक्ति करे।

मन्त्र : ॐ नमो आदेश गुरु को त्रिलोचन देवी को अंजनी को महासाबरी को अमुक रोगी को ठीक करे चर्म रोग मिटावें रक्त शुद्ध करे जो न करे तो भगवती चिन्तामणि को त्रिशुल खावे।

प्रत्येक माला की मन्त्र जप समाप्ती पर नौ नर्मदेश्वर पर जल चढ़ावे जब तीन माला मन्त्र जप हो जाय तो पीपल के पत्ते तथा नर्मदेश्वर पात्र से अलग रखदे तथा उस जल में से कुछ तो रोगी को पिला दे और कुछ उसके सारे शरीर पर लगा दे ऐसा नौ दिन करे पीपल के पत्ते रोज बदलने आवश्यक हैं।

प्रयोग समाप्ती के बाद नर्मदेश्वर घर के किसी शुद्ध स्थान पर स्थापित कर दे तो नौ दिन के भीतर-भीतर रोगी को स्वास्थ लाभ हो जाता है और वह अनुकूलता अनुभव करता है।

यह प्रयोग परीक्षित है, और इससे रोगी को विशेष आराम प्राप्त होता है मन्त्र जप समाप्ती के बाद वह रोगी रुद्राक्ष माला गले में धारण किये रहे।

3. पुरुष जननेन्द्रिय सम्बंधी रोग

इसमे पुरुष का नामर्द होना जननेन्द्रिय में शिथिलता रहना कामोत्तेजना न होना जल्दी स्खलित हो जाना स्तंभन न रहना, वीर्य का पतला या दुर्गधंपूर्ण होना मूत्राशय में पथरी होना आदि जननेन्द्रिय से सम्बंधित समस्त रोगों के लिए यह प्रयोग पूर्ण प्रभाव युक्त हैं।

किसी भी शुक्रवार के दिन स्नान कर शुद्ध वस्त्र धारणकर उत्तर दिशा की ओर मुहँ कर बैठ जाय और सामने पाँच गुलाब के पुष्प रख दे प्रत्येक पर काम देव हेत्वा स्थापित करे उन पर केशर लगावे और पूजन करे फिर स्फटिक माला से निम्न मन्त्र जप करे।

मन्त्र : ॐ नमो नमो पशुपतयो कामदेवाय विरह विरह सर सर नृत्य नृत्य चल चल वल वल महंलाय प्रवेशय प्रवेशय फट ।

इसमे नित्य तीन माला मन्त्र जप आवश्यक है और प्रत्येक माला के बाद उन कामदेव हेत्वा पर जल चढावे। मन्त्र जप के बाद उस जल में से कुछ भाग पी लेवे और कुछ भाग पुरुषेन्द्रिय पर लगा दे इस प्रकार ग्यारह दिन प्रयोग करे गुलाब के पुष्पों को किसी पवित्र स्थान पर डाल दे।

ग्यारह दिन प्रयोग करने के बाद वे पाँचों कामदेव हेत्वा एक ताबीज में भरकर कमर में बांधे तो निश्चय ही वह व्यक्ति सम्बन्धित बीमारियों से मुक्त हो जाता है और काम कला में पूर्ण सक्षम होकर सफलता प्राप्त करता है उसका आगे का जीवन पूरी तरह से आनन्दमय बन जाता है।

4. स्त्री रोग

स्त्रियों को कई प्रकार के रोग हो जाते हैं, जिनमें प्रदर सफेद पानी आना, कमर मे दर्द, सूतिका रोग हिस्टीरिया गर्भ स्थिर न रहना, रक्तप्रदर शरीर में दर्द बना रहना, गर्भाशय में सूजन गर्भाशय का मुँह संकीर्ण या बन्द होना आदि रोगो के लिये यह प्रयोग महत्वपूर्ण है।

शुक्रवार को स्त्री स्वयं स्नान कर अपने बाल धो ले और गुलाबी आसन पर गुलाबी साड़ी पहन कर उत्तर दिशा की ओर मुँह कर बैठ जाय सामने सात गुलाब के पुष्प रख दे और प्रत्येक गुलाब के पुष्प पर रति गुटिका, स्थपित करे इस प्रकार सात रति - गुटिकाएँ रखे फिर उस पर केशर का तिलक करे और हाथ में जल लेकर कहे कि मेरे शरीर के सभी रोग दूर हो ।

फिर सामने अगरबत्ती व घी का दीपक लगाकर स्फटिक माला से निम्न मन्त्र की तीन माला मन्त्र जप करे ।

मन्त्रः- ॐ नमो कंन्दर्प सर विजलिनी सर्व रोग समन करी स्वाहा ।

प्रत्येक माला के बाद उन रति गुटिका पर जल चढावे माला मन्त्र जप के बाद गुलाब के पुष्प की पंखुडियाँ खा ले और पानी पी ले रति गुटिकाएँ अलग रखकर उस जल का कुछ भाग पी ले तथा कुछ भाग कमर के हिस्से पर लगा दे । इस प्रकार सात दिन करे। आठवे दिन वे `रति गुटिकाएँ ` किसी ताबीज में रख कर वह ताबीज कमर में बांध दे तो समस्त प्रकार के स्त्री रोग से छुटकारा मिल जाता है । और जब तक वह यन्त्र पहना हुआ होता है तब तक ये रोग पुनः व्याप्त नहीं होता।

5. नेत्र रोगः-

आखों का कमजोर होना, आँखे लाल रहना आँखो में खुजली होना आँखो की पुतली पर काला या सफेद धब्बा बनना रतौंधी होना कम दिखाई पड़ना या किसी भी प्रकार की नेत्रों की बीमारी के लिए यह प्रयोग विशेष अनुकूल है।

किसी भी रविवार से यह प्रयोग प्रारम्भ किया जाना चाहिए किसी चांदी या स्टील प्लेट में केशर से निम्न यन्त्र बनावे।

यन्त्र

0	0	0	0
0	0	0	0
0	0	0	0

फिर इस यन्त्र पर दिव्य यन्त्र स्थापित करे और केशर से पूजन करे फिर स्फटिक माला से निम्न मन्त्र जप करते समय घी का दीपक लगाये रखे, सफेद आसन पर सफेद धोती पहिन कर उत्तर दिशा की ओर मुँह कर बैठे ।

मन्त्रः- ॐ नमो नमो दिव्याय मरकेतवे पुस्प बन्वे सकल सुरासुर नेत्राय सुख प्रदाय स्वाहा

इस प्रकार नित्य तीन माला मन्त्र जाप करे प्रत्येक माला पूरी होने पर उस यन्त्र पर जल चढ़ावे तिन माला पूरी होने पर वह दिव्य

यन्त्र अलग कर दे और प्लेट में जो केशर से यन्त्र बना है वह हाथ की ऊंगली से पानी में घोल दे और वह पानी दोनो नेत्रों पर लगावे और फिर आँख पर पट्टी बांधकर दस मिनट के लिए सो जाय।

इस प्रकार ग्यारह दिन तक करे ग्यारहवे दिन के बाद वह दिव्य यन्त्र तावीज में भरकर गले में धाण कर ले तो नेत्र रोग हमेशा के लिए मिट जाते हैं और उसकी आँखे बराबर स्वस्थ बनी रहती हैं।

यह प्रयोग आजमाया हुआ है और सिद्ध है।

6. बाल रोगः-

बालकों को बचपन में कई प्रकार के रोग हो जाते हैं जिनमे सूखा रोग अर्थात शरीर सूखता जाना, बालक के पेट मे कीडे पड जाना शरीर में कमजोरी होना दुबलापन पेट फूल जाना हाथ पैर कमजोर होना और अन्य बाल रोगों से सम्बन्धित बीमारियो को दूर करने के लिए यह प्रयोग विशेष महत्वपूर्ण हैं और इसका प्रयोग अवश्य ही करना चाहिए।

सोमवार के दिन बच्चे की माँ या बच्चे का पिता पात्र में "शिशु रोग निवारण यन्त्र" रख दे और उस पर एक गुलाब का पुष्प रख कर जल चढाये फिर मूँगे की माला से निम्न मन्त्र की तीन माला मन्त्र जप करे।

मन्त्रः- ॐ नमो भगवती वज्र श्रृंखले रोग भक्षतु स्वादतु सर्व उपद्रव रक्षतु नमः

इस प्रकार नित्य तीन माला जप करे मन्त्र जप के बाद गुलाब का पुष्प बच्चे को खिला दे या पानी में घोलकर पिला दे इस प्रकार तीन दिन करे तीन दिन के बाद वह "शिशु रोग निवारण" यन्त्र काले धागे में पिरोकर बालक के गले में बांध दे तो निश्चय ही उस बालक के समस्त रोग दूर हो जाते हैं और वह पूर्ण स्वास्थ्य लाभ करने लग जाता है। यह प्रयोग आजमाया हुआ है और प्रत्येक माँ को चाहिए कि ऐसा प्रयोग अपने बालक की शुभता के लिए सम्पन्न करे।

2) खाँसी और दमाः-

चाहे कितना ही पुराना दमा या खासी हो और ठीक नही हो रही हो तो यह प्रयोग उनके लिए संजीवनी की तरह है।

रविवार के दिन से यह प्रयोग प्रारम्भ करे ऊत्तर दिशा की ओर मुँह कर सफेद आसन पर बैठकर सामने किसी पात्र में नागर वेला का एक खाली पत्ता रख दे फिर उस पर दक्षिणावर्ती शंख रख दे जो मात्र आंगूठे के आकार का हो और उसके सामने किसी भी माला से तीन माला मन्त्र जप करे।

मन्त्र :- ओम ह्रीं श्रीं द्रां द्रीं जं जं कामेश्वरी बाणा देवतै नमः

तीन माला मन्त्र जप के बाद वह शंख अलग रख दे और वह पान तथा उस पर जो फिटकरी का पौडर रखा हुआ है वह रोगी

मुँह में रख ले तथा उसकी लार निगलता रहे बाहर नही थूके यह नौ दिन का प्रयोग हैं दसवे दिन वह दक्षिणवर्ती शंख लोह के पात्र पर रखकर नीचे आँच देकर जला दे और उसकी राख को शीशी में भर कर रख दे फिर नित्य नागरवेल के पान पर दो चुटकी फिटकरी का पौडर तथा एक चुटकी वह राख लेकर मुँह में रखे और उसकी लार निगले तो कुछ ही दिनों में दमा रोग हमेशा के लिए मिट जाता हैं खासी भी समाप्त हो जाती हैं।

शरीर की फालतू चरबी हटाने का प्रयोग

शरीर में जहाँ पर भी फालतू चर्बी या थुलथुलापन होगा वह बेडौल और अशोभनीय ही होगा ऐसा थुलथुलापन होठो में, गालो में, चहरे में, वक्षस्थल पर, कुल्हो में, हाथ पैरो में, पेट में या कमर में कही पर भी हो सकता हैं इस से सारा सौन्दर्य मारा जाता है और धीरे धीरे शरीर बेडौल हो जाता है।

इसके लिये एक अत्यधिक उत्तम प्रयोग साबर साधनाओं में है जिसे मैं पहली बार स्पष्ट कर रहा हूँ शुक्रवार के दिन गुलाबी रंग की साडी पहिन कर गुलाबी आसन पर बैठकर उत्तर दिशा की ओर मुँह कर बैठ जाय। सामने किसी पात्र मे नागमुष्टिका यन्त्र स्थापित कर दे और उस पर केशर लगावें फिर सौन्दर्य माला से निम्न मन्त्र का जप करे सौन्दर्य माला विशेष मन्त्रो से सिद्ध होती है।

मन्त्र : ॐ ॐ अनन्त मुखी स्वाहा

यह प्रयोग 21 दिन का है इसमे भोजन का भी विशेष विधान है, पहले दिन केवल एक कौर भोजन करे, दूसरे दिन दो कौर इसी प्रकार ग्यारहवें दिन ग्यारह कौर भोजन करे फिर बारह वे दिन धटते हुए दस कौर नौ कौर भोजन कर 21 वे दिन निराहार रहे, नागमुष्टिका यन्त्र पर आधे घंटे तक उपरोक्त मन्त्र पढ़ते हुए जल चढ़ावे और मन्त्र जप के बाद उस जल में से एक गिलास भर जल पी ले।

वस्तुतः यह प्रयोग अद्‌भुत है और चाहे शरीर में कितनी भी फालतू चर्बी हो तो भी इस प्रयोग से समाप्त हो जाती है। कौर का तात्पर्य भोजन खाते समय एक बार में जो मुहँ में डालते हैं उतने खाद्य पदार्थ को एक कौर कहते हैं।

कद बढ़ाने का विश्वसनीय प्रयोग

यदि आप सुन्दर और आकर्षक हैं पर यदि आपका कद छोटा है तो सारी सुन्दरता व्यर्थ हो जाती है छरहरा शरीर लंम्बा कद पुरुषो को पागल बना देने के लिये पर्याप्त है । इस प्रयोग से कद लंम्बा होता है । मुझे यह प्रयोग एक श्रेस्ठ योगिनी से प्राप्त हुआ था, और इसे मैने कई बार आजमाया हैं।

किसी शुक्रवार के दिन स्नान कर गुलाबी रंग की साडी पहेन कर उत्तर दिशा की ओर मुहँ कर गुलाबी आसन पर बैठ जाय सामने किसी पात्र में स्वस्तिक का चिन्ह कुंकुंम से बनाकर उस पर 21 लघु नारियल रख दे और इन सब पर कुंकुंम का तिलक करे तथा स्फटिक माला से मन्त्र का जप करे -

मंत्र :- या खवाजा खिजर मेहर मेहर लाजवाल तु लाजवाल

नित्य 11 माला जप होना चाहिए इस प्रकार चालीस दिन तक करे। पहले दिन ग्यारहवे दिन इक्कीसवे दिन तथा इकतीसवें दिन लघु नारियल बदल ले अर्थात पहले दिन जो लघु नारियल रखे थे उनकी दस दिन पूजा हो और ग्यारहवे दिन वे नारियल अन्य पात्र में रख दे और नये नारियल स्थापित कर दे इस प्रकार चार बार नारियल बदलता रहे। फिर सब नारियल प्रयोग पूरा होने के बाद पीस कर पौडर बना दे और उसकी अस्सी पुडिया बना दे एक पुडिया सुबह तथा एक पुडिया शाम पानी के साथ सेवन करे तो वे पुडियाएँ समाप्त होते होते मनोवांछित कद बढ़ जाता है और उसके रुप में अद्वितीय निखार आ जाता है।

ये लघु नारियल अंगूठे के आकार के मन्त्र सिद्ध होते हैं।

लंम्बे काले और घने आकर्षक बालों की प्राप्ती का शर्तिया प्रयोग :-

यह प्रयोग मुझे साबर मन्त्रो के ज्ञाता एक बनजारिन ने बताया था उसके बाल अत्यधिक घने काले और एडियो को छूते हुए थे इस प्रयोग से बालो का झडना बन्द हो जाता है साथ ही साथ -यदि बालो में सफेदी आ रही हो तो वह दूर हो जाती है । वास्तव में ही यह प्रयोग अत्यधिक महत्वपूर्ण है।

यह प्रयोग वह बालिका स्वयं करे जो इस प्रकार के बाल चाहती हैं। एक पात्र में जल ले लें और उसमें " पुष्पधन्वा जडी " का पौडर मिला दे फिर सामने एक अलग पात्र में गौरी गुटिका रख

कर उस पर निम्न मन्त्र पढती हुई जल चढ़ाये लगभग एक या दो बाल्टी पानी इस गौरी गुटिका पर चढ़ा देना चाहिए पौडर एक या दो तोला मिलाना चाहिए लगभग आधे घन्टे तक गौरी गुटिका पर जल चढ़ाते हुए निम्न मन्त्र पढे।

मन्त्र :- ॐ गौरी अगनी भैरवी योगिनी सहारे वपु सहारे मेरे केस सुन्दर करे लंम्बे करे घने और दिप दिप करे जो न करे तो राजा रामचन्द्र की दुहाई रुद्र को त्रिशुल खावे योगिनी की दुहाई ।

फिर उस जल से अपने बालो को धो ले इस प्रकार 21 दिन करे तो बालो का झडना बन्द हो जाता है तथा उसके बाल अत्यधिक चमकीले आकर्षक घने और झरने के समान पीठ पर लहराते हुए से होने लगते हैं।

चेहरे और शरीर के दाग दूर करने का प्रयोग

शरीर सुन्दर हो चेहरा आकर्षक हो पर यदि किसी प्रकार के घाव का निशान, मस्सा, दाग और अन्य कोई चिन्ह हो तो उससे चहेरे की सुन्दरता मारी जाती हैं इसके लिये साबर में एक विशेष प्रयोग दिया हुआ हैं जो कि अपने आप में अद्भुत हैं।

यह प्रयोग सोमवार से प्रारम्भ करना चाहिए और तीस दिनो का प्रयोग है प्रातः उठकर सिर के बाल धो ले और स्नान कर आसन पर बैठ जाय सामने पारद का विशेष मन्त्र सिद्ध शिवलिंग किसी पात्र मे स्थापित कर दे और उस पर धीरे धीरे जल चढ़ाते समय निम्न मन्त्र बारबार उच्चारण करे ।

मन्त्र :- ॐ नमो शिवाय गौरी पति कामरुप दायक मेरे शरीर को भी रति समान करे फालतू दाग दूर करे गौरी के समान सुन्दर बने जो न करे तो सती गौरी की दुहाई

मन्त्र पढ़ते समय शिवलिगं पर पानी की धार पतली पतली चढ़ाती रहे, लगभग 15 मिनट तक ऐसा करे और फिर शिवलिंग को बाहर निकाल कर उस पर चढ़ाऐ हुए जल में से कुछ जल उन दागों पर लगा लो और बाकी जल पीले

इस प्रकार तीस दिन करे तो व्यर्थ के दाग आदि अशोभनीय चिन्ह समाप्त हो जाते हैं।

बाला रोग निवारक प्रयोग

यदि बालक को पीडा होती हों या बराबर बीमार बना रहता हो अथवा रह रह कर डरता हो तो यह प्रयोग अत्यधिक महत्वपूर्ण हैं।

क्लौं

रविवार के दिन भोजपत्र अथवा कागज पर केशर से यह यन्त्र बनादे और उसके ऊपर रुद्र गुटिका रख दे फिर भोज पत्र में वह गुटिका समेट कर कच्चे रेशमी धागे से सात अथवा नौ गांठ देकर मादलिये (तावीज) में रख कर गले में या हाथ में बांधने से बाल भय समाप्त हो जाता हैं और उस पर किसी भी प्रकार की पीडा भूत, प्रेत, नजर, टोना, टोटका होता हैं तो दूर हो जाता हैं और बालक स्वस्थ बना रहता हैं।

यह प्रयोग महत्वपूर्ण है और आजमाया हुआ है।

सुन्दर स्त्रियों का चारो तरफ जमघट लगा रहे।

यह तिलस्मि यन्त्र कहलाता है इस यन्त्र को पूर्णमासी के दिन सवेरे चार बजे शुद्ध शरीर होकर एक सौ एक कागजो पर अनार के रस से सरकण्डे की कलम से लिखे पीछे नित्य सुबह छे: बजे उस कागज को पानी में ग्यारह बार घुमाकर यन्त्र फेंक दे और पानी पीले परन्तु यह पानी किसी के सामने नही पिये और न किसी को बतावे कि मैं ऐसा प्रयोग कर रहा हूँ इस प्रकार इक्कीस दिन करे

यन्त्र

oooo	oooo	oooo	oooo
oooo	oooo	oooo	oooo
oooo	oooo	oooo	oooo
oooo	oooo	oooo	oooo

यह सूर्य चन्द्रमा का प्रतापी यन्त्र है और ऐसा यन्त्र सिद्ध करने के बाद जीवन भर उसके आगे पीछे सुन्दर सुसज्जित कामी स्त्रियों का मेला लगा रहता है।

स्त्री वशीकरण यन्त्र

यह यन्त्र रमल के अनुसार एक गुप्त भेद चक्र हैं इसको अनार के रस के साथ कलम डुबो कर कोरे सफेद कपडे पर लिखो फिर उसकी बत्ती बनाकर घी के दिये में जलाओ दिये का मुंह स्त्री के घर की ओर हो। चालीस दिन प्रति दिन ढाई घण्टे दिया जलाओ तो वह स्त्री वश में होती हैं और जीवन भर दासी बनी रहती हैं।

o |o	o o =
oo||	o|||o
|||oo	o|||
o||o	||||

यह यन्त्र महत्वपूर्ण हैं और इसका असर निश्चित रुप से होता हैं।

आकस्मिक धन प्राप्ती या लाटरी प्राप्ती का प्रयोग

एकाक्षी नारियल जो कि लक्ष्मी मन्त्र से आपूरित हो उस पर चांदी का वर्क लगावे और केशर से निम्न मन्त्र लिखे।

मन्त्रः- ॐ श्रीं क्लीं ऋी देवत्यै नमः कुरु कुरु ऋद्धि वृद्धि स्वाहा

फिर स्फटिक माला से पांच माला मन्त्र जप करे और दूसरे किसी नारियाल को तोड कर उसकी गिरी से ही 108 आहुतियां दे फिर उस एकाक्षी नारियल को भण्डार की पेटी मे रखे तो निश्चय ही धन की प्राप्ति होती है और लौटरी प्राप्त होने का योग बनता है।

सर्व कामना सिद्धि प्रयोग :-

रविवार के दिन प्रातः स्नान कर, भोज पत्र पर निम्न यन्त्र बना ले और बीच में अपना नाम लिख ले फिर इसके ऊपर हाथी के नाखून का टुकडा रख दे और मूंगा की माला से पाँच माला मन्त्र जप करे।

मन्त्र :- ॐ नमः मणि भद्रें हुँ

मन्त्र जप के बाद वह हाथी का नाखून भोजपत्र मे लपेटकर चाँदी के तावीज में भरकर बांह पर बांध दे तो उसकी समस्त मनोकामना पूरी होती हैं और जहाँ भी जाता हैं उसे सफलता मिलती है।

यन्त्र
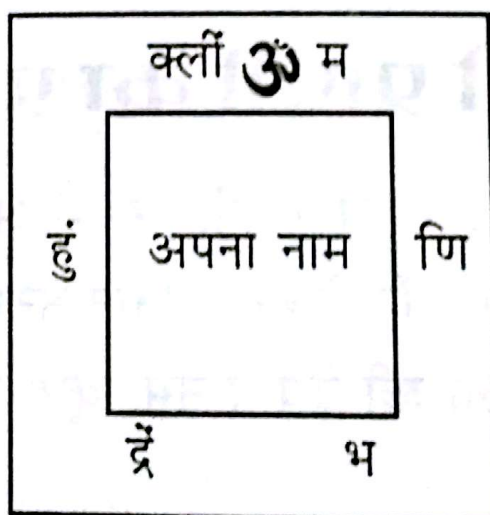
वस्तुत : यह प्रयोग आश्चर्यजनक सिद्धिदायक हैं और एक दिन का प्रयोग है।

व्यवसाय वर्धक चौबीसा यन्त्र

बुधवार के दिन इस यन्त्र को व्यापार का मालिक खुद भोज पत्र पर केशर से बनावे और उस पर लक्ष्मी गुटिका रख दे फिर इसे व्यवसाय कि रोकड रहती हो या सम्पत्ति का स्थान हो वहां पर रख दे।

१	१४	४	१५
८	११	५	१०
१३	२	१६	३
१२	७	९	६

ऐसा करने पर व्यापार दिन दुगुना –रात चौगुना बढ़ता रहता हैं यह सिद्ध प्रयोग हैं और सेकडों लोगो ने आजमाया हैं।

पुत्र प्रदायक प्रयोग

साफ भोज पत्र लेकर उसके ऊपर केशर से बालक का चित्र बनावे और सामने बैठकर पुत्र को इच्छा रखने वाली स्फटिक माला से निम्न मन्त्र का जप करे, नित्य पांच माला जप होना अनिवार्य हैं इस प्रकार ग्यारह दिन तक करे। यह प्रयोग शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा से प्रारम्भ करना चाहिये।

मन्त्र : ॐ हरिवंश श्री कृष्ण देवकी सुत वासुदवे जगपति देहि में तनयं नमः

भोज पत्र के सामने पुत्र प्रदायक यन्त्र रख दे, जब ग्यारह दिन का प्रयोग समाप्त हो तब भोजपत्र काँच की फ्रेंम में टांग दे और पुत्र प्रदायक यन्त्र गले में पहनले तो निश्चय ही बांझ स्त्री को सन्तान प्राप्ति होती है। और उसकी मन की मुराद पूरी हो जाती हैं।

शत्रु वशीकरण प्रयोग :

यह प्रयोग महत्वपूर्ण है। और इससे शत्रु वश में हो जाता है। फिर जैसा कहा जाता है वैसा ही वह करता है।

रविवार के दिन नाग मुष्टिका लाकर काले कपडे में बांध कर अपने सामने रखदे और तेल का दीपक लगा ले फिर काली धोती पहनकर काले आसन पर बैठ जाए दक्षिण दिशा की ओर मुँहकर हकीक माला से निम्न मन्त्र की 11 माला जप करे।

मन्त्र : ओम् भ्रां धुं धुं ठः ठः हुं हुं ओम्।

इस प्रकार यह पाँच दिन प्रयोग करे छठे दिन पोटली में बंधी हुई नाग मुष्टिका शत्रु के घर में या उसकी दुकान पर डाल दे तो शत्रु का मन बदल जाता है और वह पूरे तरह से वश में हो जाता है। यह प्रयोग आजमाया हुआ हैं और शीघ्र सिद्धिप्रद है।

विजय प्रयोग :

अमावस्या की रात्री को काली धोती पहिन कर दक्षिण दिशा की ओर मुँह कर बैठ जाय सामने सात गोमती चक्र रख दे और उन पर कुकुंम की बिंदियाँ लगावे फिर हकीक माला से 11 माला मन्त्र जप करे।

मन्त्र : ओम् वीर वैताल धरनी कांपे गगन गरजे मेरे शत्रु अमुक को नाश करे मेरे मन को शूल दूर करे अमुक कार्य मे सफलता दे जो न दे तो रुद्र को त्रिशूल खावे ।

ग्यारह माला मन्त्र जप होने के बाद वे सातों गोमती चक्र घर के बाहर जमीन में गाड दे तो निश्चय ही उसे इच्छित कार्य में सफलता प्राप्त होती हैं। इस मन्त्र में पहले अमुक के स्थान पर शत्रु का नाम ले और दुसरे अमुक के स्थान पर उस कार्य का उल्लेख करे जो कार्य जल्दी से जल्दी सम्पन्न करना चाहते हैं।

मुकदमे सफलता प्राप्त करने का प्रयोग

यदि शत्रु ने मुकदमा दायर कर दिया हो और मुकद्दमें में सफलता मिलने की सभांवना कम दिखाई दे रही हो तो यह प्रयोग अचूक है ऐसा करने पर शत्रु स्वत: ही हताश और निराश हो जाता हैं उसकी बुद्धि काम नही करती और कुछ ही दिनो में समझौता करने के लिए बाध्य हो जाता हैं।

रविवार के दिन काली धोती पहिन कर काले आसन पर दक्षिण दिशा की ओर मुँह कर बैठ जाय तथा सामने भैरव और भैरवी गुटिका रख दे फिर तेल का दीपक लगा ले और हकीक माला से निम्न मन्त्र की ग्यारह मालाएँ फेरे

मन्त्रः- ओम् नमो धार अधर धार बाँधू अमुक बैरी की जिह्वा बाँधु दिमाग बाँधु सारा शरीर बाँधु मती भ्रष्ट करूं थर थर कांपे आकर पांय पडे जो न ऐसो होय तो भैरव खण्डे की धार से काटे शब्द साचा पिण्ड काचा फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

इस प्रकार तीन दिन तक ऐसा प्रयोग करे चौथे दिन वह भैरव भैरवी गुटिका शत्रु के घर में बाँध कर डाल दे तो क्षण में शत्रु की बुद्धि भृष्ट हो जाती है और कुछ ही दिनो में आकर समझौता कर लेता है या मुकदमा समाप्त कर लेता है। इस प्रयोग से मुकदमे में तो सफलता मिलती है।

पूर्ण गृहस्थ सुख साबर प्रयोग

यदि प्रेमी प्रेमिका परस्पर विवाह करने ही इच्छुक हो और दोनो की रजामंदी हो परन्तु किसी वजह से लडकी के घर वाले या लडके के घर वाले अथवा दोनो के परिवार वाले रजामंद ना हो तो यह प्रयोग महत्वपूर्ण हैं और ऐसा प्रयोग करने पर घरवालो के मन बदल जाते हैं तथा वे विवाह के लिये हां मान लेते हैं।

मन्त्र :- बिस्मिल्ला महमंद पीर आवे धोड की अस वारी पवन को वेग मन को संभाले अनुकूल बनावे हा भरे कहियों करे मेहमंद पीर की दुहाई सबद साचा पिण्ड काचा फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा

तीन माला मन्त्र जप के बाद दो पुडियाँ बनावे एक पुडिया में एक मुठ्ठी सरसों तथा एक गोमती चक्र तथा दुसरी पुडिया में भी रखे सारसों में से एक मुठ्ठी सरसो तथा गोमती चक्र और फिर एक पुडिया यह प्रयोग प्रेमी या प्रेमिका किसी एक को करना चाहिए शुक्रवार के दिन स्नान कर पूर्व की ओर मुहँ कर बैठ जाय और सामने दो मुठ्ठी सरसो तथा दो गोमती चक्र रख दे फिर लोबान धूप लगा दे तथा हकीक माला से निम्न मन्त्र तीन मालाएँ फेरे।

और गोमती चक्र लडकी के घर में स्वयं लडकी किसी स्थान पर डाल दे इसी प्रकार दुसरी पुडिया लडका स्वयं अपने घर में किसी स्थान पर डाल दे तो दोनों परिवार वालों के मन अनुकूल हो जाते हैं और विवाह के लिए स्वीकृति दे देते हैं।

प्रेमी - प्रेमिका में प्रेम बढे

यदि प्रेमी - प्रेमिका के परस्पर सम्बंध रहे हो और किसी कारणवश प्रेमी का मन बदल रहा हो या प्रेमिका के मन में फर्क आ रहा हो तो इस प्रयोग को सम्पन्न किया जा सकता है यदि प्रेमिका के स्वभाव या विचारो में अन्तर आया हो तो यह प्रयोग निश्चित रुप से प्रेमिका को करना चाहिए।

रविवार के दिन प्रातः किसी पात्र में आकर्षण मुद्रिका रख दे और उसके सामने हकीक माला से निम्न मन्त्र की तीन मालाएँ फेरे इस प्रकार पाँच दिन तक करे

मन्त्र :- ओम् नमो राजा अनगा नमो शनी नमो बावन पोर चैसट भैरु नमो देव - दानव नमो अनंग पाल मेरो कारज सिद्ध करो अमुक को मेरे वश मे करो जो मै कहूँ वो करे आज्ञा माने वश में रहे।

इसमे अमुक के स्थान पर उसका नाम उच्चारण करना चाहिए जिसे वश में लाना हो

पांचवे दिन प्रयोग समाप्त कर वह मुद्रिका किसी भी हाथ की किसी भी अंगुली में धारण कर ले और फिर वह प्रेमी या प्रेमिका के सामने जावे तो उस अगुंली पर नजर पडते ही उसका मन वशीकरण युक्त हो जाता हैं और जिस प्रकार से हम चाहे वह करने लग जाता हैं।

यह प्रयोग प्रमाणिक है और आजमाया हुआ है इसका वार कभी भी खाली नही जाता।

इच्छानुसार हाँ भरने के लिए

प्रेमी या प्रेमिका में से कोई एक शादी करने का इच्छुक हो परन्तु प्रेमी की तरफ से या प्रेमिका की तरफ से स्वीकृति नही मिल रही हो अथवा इन दोनो में से किसी का मन बदल गया हो तो यह प्रयोग करने पर उसके विचार अनुकूल बन जाते हैं और जैसा चाहते हैं वैसी स्वीकृति मिल जाती हैं। यदि लडकी का मन बदल गया हो और विवाह के लिए हां नही भर रही हो तो यह प्रयोग लडके को करना चाहिए इसी प्रकार लडके का मन बदल गया हो और विवाह के लिए राजी नही हो तो यह प्रयोग लडकी को करना चाहिए।

शुक्रवार की रात अपने सामने हजरा पीर चौकी रख दे यह चांदी के तावीज के आकार की होती हैं। और विशेष साबर मन्त्रो से सिद्ध होती है फिर इसके सामने बैठकर हकीक माला से निम्न मन्त्र की पांच माला फेरे।

मन्त्रः- ओम् नमो आदेश गुरु को वज्र मन वज्र किवाड़ बांधे दसो द्वार को बांधे उलट वेद वही को उछाले पहली चौकी हनुमान की दुसरो भौव की करज सिद्ध करे हां भरे कइयो करे जो न करे तो नरसिंह की आन।

इस प्रकार पांच माला पूरी होने के बाद वह चौकी अपनी जेब में रख दे और दूसरे दिन किसी युक्ति से उस प्रेमी या प्रेमिका के शरीर से स्पर्श करा ले ऐसा होने पर उसका मन बदल जाता है, और वह हाँ भर लेता है यदि वह स्वयं उपस्थित न हो तो उसकी फोटो के साथ यह चौकी बांध दे तब भी कुछ दिनों के भीतर-भीतर उसकी तरफ से हाँ प्राप्त हों जाती है। यह महत्वपूर्ण प्रयोग है और इस से निश्चय ही कार्य सिद्ध होता हैं।

मनोवांछित पत्नी की प्राप्ति के लिए

जिस लडकी से आपके प्रेम सम्बन्ध हैं और सामाजिक बंधनों या कुछ विशेष कारणों से उसी लडकी से विवाह होने में अडचन आ रही हो या परिवार में विरोध बढ रहा हो तो यह प्रयोग निश्चय ही सफलता देने वाला हैं।

लडके का नाम
ओम क्रीं मैं मं द क्रीं ओम
लडकी का नाम

भोज पत्र पर केशर से यह यन्त्र लडका खुद शुक्रवार के दिन बनावे और ऊपर खुद का नाम तथा यन्त्र के नीचे उस लडकी का नाम लिख कर इस यन्त्र के मध्य मे प्रिया आकर्षण गुटिका रखकर निम्न मन्त्र की तीन मालाएँ हकीक माला से फेरे।

मन्त्र :- ओम् नमो महींदर पीर आप बडे गुणी गिरनार से उठे सब कुछ करे मेरी प्रिया मुझे मिलावें बाधा हटावे जो न करे तो गंगा जमुना की धार उलटी बहे।

तीन माला मन्त्र जप होने के बाद उसी भोजपत्र में वह गुटिका लपेट कर उसी दिन किसी सार्वजनिक स्थल या सडक पर चुपचाप रख दे तो यह प्रयोग सिद्ध हो जाता हैं और जिससे वह विवाह करना चाहता हैं उसी के साथ शीघ्र ही विवाह होने के आसार बन जाते हैं अर्थात् अपने अपने उद्धेश्य के सफलता मिल जाती हैं यह प्रयोग उत्तम कोटि का पूर्ण सफलतादायक है।

मनोवांछित पति की प्रप्ति के लिए

यदि किसी लडके से प्यार चल रहा हो और उसके साथ विवाह होने में बाधा आ रही हो लडकी वालो के तरफ से या लडके के घर वालों की तरफ से अडचने डाली जा रही हो तो यह प्रयोग आजमाना चाहिए इससे बाधाएँ और विरोध समाप्त हो जाता हैं।

रविवार के दिन भोज पत्र पर कुंकुम या केशर से निम्न यन्त्र बनावे और यन्त्र के ऊपर अपना नाम तथा यन्त्र के नीचे उस लडके का नाम लिखे जिससे वह विवाह करना चाहती हैं।

लडकी का नाम
हीं हीं ऐं हीं हीं
लडके का नाम

फिर उस यन्त्र पर प्रिय आकर्षण गुटिका रखकर निम्न मन्त्र की तीन मालाएँ करे।

मन्त्र :- ओम् नमो नमो वीर वेताल लाल मोतियो का हार लंका सो कोट समुद्र सी खाई चलो चौकी राजा रामचंद्र की आई मन चाहा वर मिले नही तो हनुमान का चक्र गिरे ।

तीन माला मन्त्र जप के बाद उसी भोजपंत्र के वह गुटिका से लपेट कर किसी सार्वजनिक स्थल या सडक पर वह भोजपत्र और गुटिका चुपचाप रख दे तो यह प्रयोग सिद्ध हो जाता हैं और जिससे वह विवाह करना चाहती हैं उसी के साथ विवाह हो जाता हैं।

यह प्रयोग आजमाया हुआ है और निश्चित ही सफलतादायक है।

विवाह का इच्छाधारी प्रयोग

यह प्रयोग शुक्रवार से प्रारम्भ करे और सात दिन करे एक बडे कोरे कागज पर बडा सा यन्त्र काली शाही से बनाओ खाना पूरी कर लो अपने नाम की जगह अपना पूरा नाम लिख दे। इच्छा क्या हैं ? ये स्थान पर विवाह लिखो जिससे विवाह करना चाहे उसके बाप का नाम लिखो फिर इष्ट का नाम लिखो

शुक्रवार से स्नान कर शुद्ध होकर केशर से नित्य एक यन्त्र बनाओ और फिर उस यन्त्र को मौली से लपेट कर सामने अगर्बत्ती
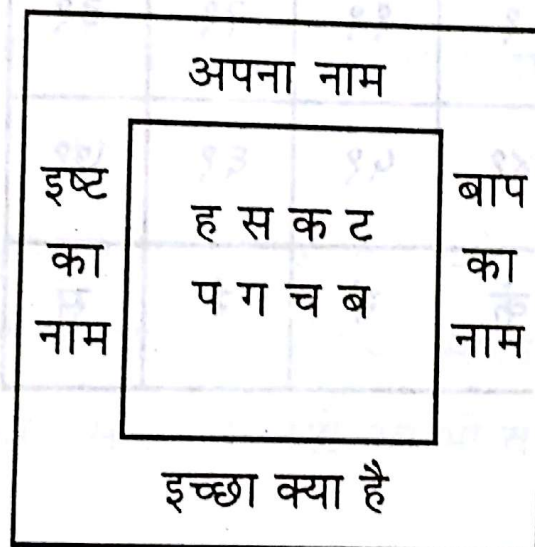
दीपक लगाओ तथा फूलो के बीच रखकर जल में प्रवाहित कर दो इस प्रकार सात दिन करो तो अगले कुछ ही दिनों में लडकी का बाप अपनी लडकी का विवाह इच्छाधारी यन्त्र करने वाले के साथ स्वयं कर देगा ।

मुराद पूरी होने का यन्त्र

नीचे दिये हुए यन्त्र की चारपाई पर बैठकर सवेरे- सवेरे अपने भगवान का नाम लेकर उठने से पहले चारपाई पर ही किसी भी शाही से हथेली पर लिखकर दो मिनट गौर से देखे फिर माथे पर हाथ रखकर अपनी मुराद मांगो इक्कीस दिन करो।

वं	भं	मं	डं
१	११	२१	३१
४१	५१	६१	७१
कं	नं	रं	सं

इन दिनो में बुरी बातो के और नशे आदि से अपने आपको बचाओ बाईसवे दिन उपवास रखो चौबीसवे दिन मुराद पूरी होने की शर्तिया इतल्ला मिलेगी और तीस दिनो में मुराद पूर्ण होगी मुराद मुमकिन ही मांगी जानी चाहिए।

जब सब प्रयोग असफल हो तब यह करे

यदि कोई स्त्री या प्रेमिका वश में नही होती हैं तो यह रामबाण प्रयोग है और इससे सफलता मिलती है।

वशीकरण गुटिका लेकर शुक्रवार के दिन उस पर चन्दन कुंकुंम और सिन्दूर बराबर मात्रा में लेकर लगा दे फिर निम्न मन्त्र की एक माला फेरे इसमे वशीकरण माला का ही प्रयोग होता हैं माला पूरी होने पर वशीकरण गुटिका पर लगाया हुआ सिन्दूर, चन्दन, कुंकुंम को परस्पर मिलाकर अपने ललाट पर बिन्दी लगा ले और जेब मे वशीकरण गुटिका रख दे ।

इसके बाद वह सम्बंधित प्रेमिका के सामने जाए तो वह जीवन भर के लिए वश मे हो जाती हैं यदि यह संभव न हो तो उसका फोटो सामने रखकर उसे प्रेम से देखे तब भी वह स्त्री वश मे हो जाती है ।

मन्त्र :- ओम् कामदेवाय काम वशंकराय अमुकस्य हृदय स्तम्भय स्तम्भय मोहय मोहय वशमानय स्वाहा

इसमे अमुकस्य के स्थान पर उस प्रेमिका का नाम उच्चारण करे जिसे वश मे करना हो।

धन बढाने का प्रयोग

साधक स्वयं बुधवार को सुबह सफेद आसन पर पूर्व की ओर मुंह कर बैठ जाय सामने सुलेमानी हकीक रख दे और उस पर नजर डालता हुआ पांच माला मन्त्र जप करे स्फटिक माला से मन्त्र जप हो माला जप के बाद उस सुलेमानी हकीक को अगुंठी में जडवाकर धारण करले तो जिस कार्य या व्यापार में हाथ डाले वह पूरी तरह से सफल हो बेतहाशा धन प्राप्त होता हो।

मन्त्रः ओम् नमो भगवती पद्मा श्री ओम् ह्री पूर्व दक्षिण उत्तर पश्चिम धन द्रव्य आवें सर्व जन्य वश्य कुरु कुरु नमः

इसे एक ही दिन में केवल पांच माला मन्त्र जप से ही सिद्ध किया जाता हैं।

चोर पकडने का मन्त्र

यदि चोरी हो जाय तो निम्न प्रयोग को सिद्ध करे रविवार की रात काला आसन बिछाकर बैठ जाय और सामने मुट्ठीभर काली मिर्च तथा दो गोखरु तुम्बी रख दे फिर हकीक माला से निम्न मन्त्र की ग्यारह मालाएँ फेरे।

जब मालाएँ पूरी हो जाय तो गोखरु तुम्बी को घर के बाहर दक्षिण दिशा को ओर फेक दे और काली मिर्च के दो - दो दाने प्रत्येक पुरुष स्त्री को खिलाये जिन पर सन्देह हो। जिसने चोरी नही की है उसका कुछ नही बिगडेगा परन्तु जिसने भी चोरी की होगी उसके मुहँ से खून आना शुरु हो जायेगा और जब तक वह चोरी कुबूल नही करेगा तब तक उसके मुह से खून आता रहेगा।

मन्त्र : ओम् कामरुपाय पीर चौसठ जोगिनी बहत्तर भैरव चोर को पकडे कडाही मे डाले खून उबाले चोरी बतावे जो कारण न करे तो हनुमत बीर की आन

श्री निखिलेश्वर पादुका पंचकम

दशशत पत्र सरोरुह मध्य विलग्नेहत्ववदाते ऽद्भुतके
कुण्डलीनी विवरान्तविलग्न सुकाण्ड सुमण्डितके ऽत्यमले।
द्वादश पत्र सरोरुहकन्दलितान्त : स्थित निजकर्णिपूटे
श्री निखलेश्वर सद्गुरु चरण द्वन्द्व महर्निशमस्मि नतः ॥१॥

तत्पुटक्लृप्ते ऽप्यादिकादि थादिरेख-समुल्लसिते
कोण त्रितयविलक्षित वर्ण हकार लकारे अप्यक्षयुजे
मण्डल भावपराप्ते-ऽधोमुख कोण त्रितयेह वाप्त पदं
श्री निखिलेश्वर सद्-गुरु चरण द्वन्द्व महर्निश मस्मि नतः ॥२॥

तत्पुट गतपटु विद्युत्प्रकटित सूक्ष्म कडारिम कृतकलहे
मणिनिभपाटल तेजोयुक्त हृदि वपुषि सच्चिन्मयके
बिन्द्वात्म क नादात्मक मणि पीठात्मक मण्डल मध्यगतं
श्री निखिलेश्वर सद्गुरु चरण द्वन्द्व महर्निशमस्मि नतः ॥३॥

तस्यो परिगत विद्युज्जवाला त्रितयविलास विराजितके
परि बृंहणाप्त समास्पदके जगदादि समुद्गत युग्मयुजे
सकलं ग्रसितुं सुतमां सुसमर्थ महो च्चसमुत्कर-हंसयुगे
श्री निखिलेश्वर सदगुरु चरण द्वन्द्व महर्निशमस्मि नतः ॥४॥

निःशेषं सुनि-विष्टं सुमणि पाद पादुका युग्मगतं
निखिला धौघ-कृत कोलाहल नियमनदक्ष तमाति तमम्
प्रोज्वल किसलय रक्तं चन्द्रश्वेतन खोल्लसितप्रभकं
परशिवशिवा परमृतसरः सरोज निभं परमं शरणं
श्री निखिलेश्वर सद्गुरु चरण द्वन्द्व महर्निशमस्मि नतः ॥५॥

जय गुरुदेव

गुरुकार्य करने हेतु उस ज्ञान को बांट जा रहा है।

श्री निखिल चेतनाकेन्द्र, हैदराबाद